एक प्रति का मूल्य 3/-

भार्गव समाचार दर्शिका

वर्ष 49 मई, 2020 अंक 2

द्वितीय भाग - विवाह संस्कार

ॐ 卐 ॐ 卐 ॐ

Over 50 Years
Quality Healthcare

Cooper Pharma Limited

Rakesh Bhargava
Managing Director
09810348149

Lata Bhargava
Director
09910045970

Abhishek Bhargava
09958677899

cGMP, WHO-GMP & ISO 9001:2000 Certified

Regd. Office: 12/12, Shakti Nagar, Delhi - 110 007 (INDIA)
Tel.: (011) 26841442
Head Office: Plot no-5, Nidhi Plaza IInd floor, L.S.C., Gulabi Bagh, Shakti Nagar, Delhi - 52
Tel.: (011) 23653404, 23653537, 23653405
Works at : C-3, Industrial Area, Selaqui, Chakrata Road, Dehradun - 248197 (Uttarakhand)
Tel.: (0135) 2698730, 2698686
E-mail : cooperpharma@hotmail.com Visit us at : www.cooperpharma.com

IN MEMORY OF

LATE SHRI RAJ NARAIN BHARGAVA

J. NORAIN & SON
GASKETS & MATERIALS

Dealers of Asbestos Jointing Sheets
Aromatic Chemicals and Compounds

A-55/1, G.T. Karnal Road Indl. Area, Delhi-110033
Phone : 27428587, 47065521
E-mail : paras1966@hotmail.com
Mobile : 9810158418
Resi. : 011-27020222

Perfact | Group
TOTAL ENVIRONMENTAL SOLUTIONS
CONSULTANCY WING
Environmental Clearances
Designing, Operation & Maintenance of Pollution Control Devices (APCS, ETP & STP)
Environmental Audit
Consultancy for Compliances of Environmental Laws
NBWL / Forest / Ground Water Clearances
ENVIRONMENT LABORATORY
Testing Laboratory
Air Quality
Water Quality
Soil Quality
Noise level
Indoor Air Quality
Work zone Monitoring
Metal Testing
WASTE MANAGEMENT
Electrical & Electronics Waste Management
Plastic Waste Management
Approved recycler of Plastic Waste under Plastic waste Rules 2016.
Solid Waste Management
Liquid waste Management
PERFACT SOLUTIONS
PERFACT GROUP
Total Environmental Solutions
5th Floor, NN Mall,
Sector - 3, Rohini, Delhi – 110 085
Phone : +91-11-49281360/61
Website : www.perfactgroup.com
Email : info@perfactgroup.in
POLYGAMMA RECYCLING LLP
Factory Address :
C-15, DSIIDC, Industrial Complex,
Nangloi, Rohtak, Road,
New Delhi – 110 041
Phone : +91-9818424364
Email : polygamma.recycling@gmail.com
Perfact Researchers Pvt Ltd
Perfact Services
PolyGamma

Total No. of Pages 48 (including title).

卐 सर्व भूतहिते रताः 卐

भार्गव समाचार दर्शिका

संस्थापक : श्री नवीन चन्द्र भार्गव

वर्ष 49 | मई, 2020 | अंक 2

प्रबन्ध सम्पादक
श्रीमती नीरा भार्गव
मैसर्स कनु एस्टेट्स (प्रा.) लि.
दूरभाष : 9811066272

सम्पादक
श्री योगेश भार्गव
मैसर्स भृगु प्रिंटर्स
दूरभाष : 9312243182

भार्गव परिवारों में प्रचलित संस्कारों पर आधारित

'संस्कार पद्धति'

लेखकः योगेश भार्गव

द्वितीय भाग – विवाह संस्कार

कार्यालय व पत्र व्यवहार का पता
योगेश भार्गव, सम्पादक भार्गव समाचार दर्शिका
मानव धर्म भवन, 67/3, मद्रास हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली–110002
मोबाइल : 9312243182 ई–मेल : bhargavasamachar@gmail.com

संरक्षक :

श्री सुरेश भार्गव	**श्री अशोक भार्गव**	**श्रीमती मंजू भार्गव**
कनु एस्टेट्स (प्रा.) लि.	एक्स. एल. लेबोरेट्रीज	दरियागंज, नई दिल्ली
दूरभाष : 26344142	दूरभाष : 25920680	मो. : 9312704470
श्री ए. एस. भार्गव	**श्रीमती मंजू भार्गव**	**श्री राकेश भार्गव**
ग्रेक्योर फार्मेसियुटिकल्स लि.	नोएडा	कूपर फार्मा, दिल्ली
दूरभाष : 25411594	मो. : 9310950999	दूरभाष : 23842587

संयोजक :

श्री संजीव भार्गव	**श्री देवेन्द्र कुमार भार्गव**	**श्री दिवाकर भार्गव**
घौंडा, मौजपुर	किशोरी लाल एजेन्सीज़	भार्गव कमर्शियल प्रा. लि.
मो.: 9136229066	मो. : 9871222158	मो. : 9810003713

सह सम्पादक :

श्री बाल कृष्ण भार्गव	**श्री मयंक भार्गव**	**श्रीमती मीनाक्षी भार्गव**
राजौरी गार्डन	घौंडा	डी.एल.एफ.
मो.: 9891910968	मो.: 9718011810	मो.: 8882954428

सदस्य :

श्री राजेश भार्गव	**श्री अजय भार्गव**	**श्री सुधाकर भार्गव**
प्रशान्त विहार	पटपड़गंज	आनन्द विहार
मो.: 9810130726	मो.: 9810380343	मो. : 9810042132
श्री सर्वेश भार्गव	**श्रीमती आरती भार्गव**	**श्रीमती नीता भार्गव**
दरियागंज	रोहिणी	कौशाम्बी
दूरभाष : 23265973	मो. : 9818884535	मो. : 9910288633
श्रीमती मनी भार्गव		**श्रीमती अनु भार्गव**
आनन्द विहार		घौंडा, मौजपुर
मो. : 9871793755		मो. : 9212944101

इस अंक में...

रंगीन विज्ञापन	3, 4, 45, 46
सगाई/अंगूठी भेजना	9
वैवाहिक कार्यक्रम	9
छठी	9
अंगूठी पहनाना	10
लेना-देना	10
बोर चोटी गूंधना या सगाई पहनाना	11
सगाई की विदाई	11
देव स्थापना	11
पूजन की थाली	12
कन्या पक्ष द्वारा लग्न लिखाना	12
वर पक्ष द्वारा लग्न लेना	13
हल्द हाथ	14
पाँवड़े बनाना	15
कोठियार	15
देव-पूजन तथा रतजगा	16
तेलताई	17
कांकण बांधना	18
ब्रह्मा पूजन (चाक पूजन)	18
बूढ़ा बाबा पूजना	19
भात	19
भात पहरना	20
मंडप-रोपन	21
बाली पहनाना	21
फोकण्डी	21
घुड़चढ़ी के लिए तैयार सामान की सूची	21
घुड़चढ़ी	21
बरी में भेजने का सामान	22
स्वागत बारात	23
वर माला	23

सम्प्रदान 23
विवाह 23
बरी पहनाना 24
जूता चुराई 25
विदा के समय का सामान 25
बर्तन 25
तीयल 26
बारात वापस आने पर वर पक्ष के यहाँ की रस्में 28
वार रुकाई 28
देवपूजन 28
कांकण खोलना 29
बायना खोलना 30
विज्ञापन 31–44

विवाह आदि शुभ अवसरों पर पत्रिका को मुक्त हस्त से दान दें।
सम्पादक

With Best Compliments from :-

BHARGAVA FINANCE & LEASING CO.

NDP CHITS PVT. LTD.

SBJ CHITS PVT. LTD.

Directors : Kuldeep Bhargava
Director : Anuj Bhargava

Mobile : 9810182101, 7838382101
E-mail: bhargavafinlease@yahoo.co.in
404-405, Amber Tower, Azadpur,
Near Aakash Cinema, Delhi-110033

संस्कार पद्धति

(भार्गव समाज में प्रचलित संस्कारों के आधार पर)

विवाह संस्कार

सगाई/अँगूठी भेजना

सम्बन्ध निश्चित हो जाने के पश्चात कन्या पक्ष की ओर से सगाई की रस्म में चाँदी की एक अँगूठी व तिलक के रुपये तथा रोली-अक्षत, फल, मिठाई वर पक्ष के पास भेजी जाती है। **(आजकल सोने की अंगूठी भी भेजी जाती है, परन्तु चाँदी की अंगूठी अवश्य जाती है।)**

वैवाहिक कार्यक्रम

विवाह कार्यक्रम का प्रारम्भ सुचारु रूप से निर्विघ्न होने के लिए एवं वर-वधु के नवजीवन की मंगल कामना के लिए भगवान का नाम लेना चाहिये। हमारे परिवार में 'श्री हरिगीता' का पाठ होता है। 'श्री हरिगीता' का पाठ करते समय सम्पुट लगाते हैं।

''श्रीकृष्ण योगेश्वर जहाँ अर्जुन धनुर्धारी जहाँ।
वैभव, विजय, श्री, नीति सब मत से हमारे हैं वहाँ।।''

छठी

विवाह से पूर्व लड़के की छठी की जाती है। यदि परिवार में पहले कन्या का विवाह हो तो उससे पूर्व लड़के की छठी करनी चाहिये। यदि लड़का न हो तो लड़की की छठी करनी चाहिये। विवाह से पहले शुभ मुहूर्त देखकर छठी की तिथि निश्चित कर भात की चिट्ठी भेजी जाती है। छठी की तिथि से पहले दिन रात रखी जाती है। सभी परिवार के व्यक्ति रात के

छींटे लगाकर पैसे चढ़ाते हैं। दूसरे दिन प्रातः तारों की छाँव में छठी होती है। बुआ के यहाँ से आये नये कपड़े लड़के/लड़की को पहनाये जाते हैं। बुआ द्वारा परिवार सम्बन्धित नेग किये जाते हैं। बुआ को उसके बदले में उपहार दिया जाता है। उसके बाद भात की रस्म होती है। भात मामा द्वारा दिया जाता है व परिवार के उपस्थित जनों को तिलक किया जाता है। **(आजकल यह रस्म विवाह के अवसर पर ही की जाती है।)**

अँगूठी पहनाना

आँगन में चौक पूर कर बिना कील वाले दो पट्टे बिछावें (एक वर के लिए तथा दूसरा विनायक के लिए) पट्टों पर लाल या गुलाबी रंग का वस्त्र बिछाकर वर तथा विनायक को उस पर बैठाया जाये। सबकी उपस्थिति में पंडित जी से वर के हाथ से गणेश-पूजन कराकर कन्या पक्ष की ओर से आयी हुई चाँदी की अँगूठी पहनायें। अँगूठी के साथ आये हुए रुपयों से तिलक कर दें। इसके बाद बहन या बुआ आरता एवं वारी फेरी करे तथा वर थाल में बहन के लिए रुपये डाले। वर पट्टे पर से उठकर सभी बड़ों के पैर छूकर आशीर्वाद ले। **(यह कार्यक्रम आजकल लग्न के साथ ही होता है।)**

लेना-देना

अँगूठी की रस्म के बाद शुभ मुहूर्त में वर पक्ष को, होने वाली वधू के पहनने के लिए एक साड़ी, ब्लाउज, पेटीकोट, रूमाल, तथा बोर चोटी या बैना, सुहाग पिटारी (कलावा, तेल, कंघी, मेंहदी, बिन्दी, चूड़ी आदि) व आभूषण भेजने चाहियें। फल, मिठाई आदि भी ले जायें। साथ ही चार थैलियों में निम्न सामान भेजा जाता है। प्रत्येक थैली में मेंहदी, डोरा, चूड़ी, पैसे, पीले या लाल कपड़े में पाँच सुपारी और हल्दी से पीले रंगे हुए चावलों के कुछ दाने बाँध कर डालें। इसे **चीर सुपारी** कहते हैं।

1. एक थैली जो नीचे से लाल तथा ऊपर से सफेद कपड़े की हो उसमें सवा सेर मेवा, दो गोले सहित बनायी जाती है।
2. एक सफेद थैली में सवासेर नुकती के लड्डू रखे जाते हैं।
3. एक सफेद कपड़े की थैली में मिश्री को पीले व गुलाबी रंग के छीटे देकर रखें।
4. एक अन्य सफेद थैली में पाँच प्रकार के जाड़े के लड्डू (मेवा के) बनाकर कोथली में रक्खें।

बोर चोटी गूँधना या सगाई पहनाना

वधू के लिए ऊपर लिखा सामान लेकर कन्या पक्ष के यहाँ जाना चाहिए। दोपहर के समय कन्या को सिर सहित स्नान कराके चौकी या पट्टे पर पूरब की ओर मुँह करके बिठावें। कन्या की ननद या ससुराल से आई कोई भी स्त्री अथवा कन्या की भाभी सिर गूँध कर सब वस्त्र व आभूषण कन्या को पहना दे और गोद में मेंहदी डोरा सहित लाये हुए सामान में से थोड़ा-थोड़ा सामान कन्या की गोद में दे देवें। कन्या का मुँह जुठाल कर वारी फेरी करें। उसको माँ या दादी की गोद में बिठावें। इसके बाद कन्या सबको प्रणाम कर आशीर्वाद प्राप्त करे।

सगाई की विदाई

कन्या पक्ष की ओर से भेंट तथा मिठाई, फल आदि भेजा जाता है।

देव-स्थापना

विवाह का शुभ कार्य आरम्भ करने से पूर्व गणेश जी की मूर्ति द्वारा देव स्थापना की जाती है व सेढ़माता (कुल देवी की स्थापना करनी चाहिए)। गणेश जी सब विघ्न बाधाओं को दूर करते हैं। एक दिया

जलाकर व चार नुकती के लड्डू रखकर उसका भोग लगा दें। कुल देवी की स्थापना के लिए एक टोकरी में कपड़ा बिछाकर अपनी कुल देवी स्थापित की जाती है। टोकरी में हल्दी, सुपारी, अक्षत व हरी दूब भी रखें। इस टोकरी को बहन या बुआ घर में ले कर आती है। प्रत्येक रस्म को आरम्भ करने से पूर्व घर की स्त्रियाँ (दादी, माता, जेठानी व देवरानी) सभी इनको छींटे देकर इनकी पूजा करती हैं।

पूजन की थाली

एक थाली में पूजन-सामग्री व गणेश जी की मूर्ति रखें। गणेश जी की मूर्ति नहीं होने पर एक सुपारी में कलावा बाँध कर थाली में रखें। नई सीप में रोली, चावल व हल्दी लेकर साथ ही दूब, फूल, पान, बताशे, सुपारी, एक दीपक तथा जल का एक पात्र भी उसी थाली में रख लें। यह पूजन की थाली समस्त नेग व शुभ कार्यों के समय पूजन में काम में लाई जाये।

कन्या पक्ष द्वारा लग्न लिखाना

कन्या के विवाह में लग्न 5 या 3 दिन पूर्व सुविधानुसार किसी शुभ दिन में लिखी जाये। आँगन में चौक पूरकर बिना कील लगे दो पट्टे बिछावें और उन पर कन्या तथा विनायक को बैठावें। लग्न के समय कन्या को गोटा लगी गुलाबी साड़ी तथा नई नथ पहनाई जाये। पंडित जी द्वारा कन्या के हाथ से पूजा की थाली में रखे गणेश जी व नवग्रह की पूजा कराई जाये। लग्न पत्रिका के अन्दर एक सिक्का, दो हल्दी की गाँठ, दो सुपारी, रोली, चावल के टीके लगाकर पत्रिका बन्द करके उस पर दो कलावे लपेट दें तथा उस पर रोली से स्वास्तिक बना दें। पूजन कराने के बाद लग्न पत्रिका तथा भात पत्रिका पंडित जी द्वारा लिखवायें। लग्न

पत्रिका में सर्वप्रथम कन्या पक्ष की ओर के सब पुरुषों के नाम, जिनकी ओर से विवाह का निमंत्रण होता है, लिखते हैं। विवाह की तिथि तथा अन्य रस्मों की तिथि की सूचना भी वर पक्ष को उनके परिवार के सभी सदस्यों के नाम लिखकर दी जाती है। लग्न पत्रिका वर पक्ष के यहाँ भेजी जाती है।

लग्न पत्रिका के साथ ही चार भात पत्रिकाएँ भी लिखी जाती हैं, जिनमें एक भात पत्रिका सर्वप्रथम गणेश जी के नाम लिखी जाती है तथा अन्य तीन पत्रिकाओं में से एक कन्या के नाना-मामा (भातेई) के लिए, दूसरी कन्या की माता के मामा-नाना के लिए (बड़ भातेईयों) तथा तीसरी भात पत्रिका कन्या के पिता के नाना-मामा के लिए लिखी जाती हैं। भात पत्रिका में भी सब घर के पुरूषों के नाम भातेईयों और बड़ भातेईयों के नाम तथा भात की तारीख लिखकर प्रत्येक भात पत्रिका में हरी दूब व पीले अक्षत (चावल), हल्दी की एक गाँठ व एक सुपारी तथा एक सिक्का रखकर पत्रिका बन्द कर उस पर दो कलावे लपेट दें तथा उस पर रोली से स्वास्तिक बना दें। लिखी हुई ये चिट्ठियाँ कन्या की गोद में दे दें। बहन या बुआ आरता व वारी-फेरी करें। कन्या व विनायक का मुँह बताशे से मीठा कराकर उनको देवस्थान पर ले जावें। देवस्थान में जाकर कन्या कुलदेवी आदि का पूजन करे व कन्या की माता कन्या को गोद में बिठाकर आशीर्वाद दे। फिर लग्न पत्रिका वर पक्ष के यहाँ तथा भात की चिट्ठी भातेइयों के यहाँ भेज दें। गणेश जी के नाम की भात पत्रिका पूजन की थाली में ही रख दें।

वर पक्ष द्वारा लग्न लेना

कन्या पक्ष की ओर से लग्न पत्रिका आती है। बिना कील लगे दो पट्टे बिछाकर वर और विनायक को बिठायें। वर के हाथ से गणेश जी तथा नवग्रह की पूजा करावें। इसी समय चार भात पत्रिकाएँ लिखी जायें। एक

भात पत्रिका पूजा की थाली के श्री गणेश जी के नाम, एक भात पत्रिका वर के मामा-नाना (भातेई) तथा एक-एक पत्रिका वर की माता व पिता के नाना-मामा (बड़-भातेईयों) के लिए लिखी जायें। इनमें अपने घर के सभी पुरुषों के नाम लिखकर बाद में भातेईयों के नाम व भात की तारीख लिखकर उन्हें आमंत्रित करें। इसके बाद कन्या के यहाँ से आयी लग्न पत्रिका को खोलकर, उसे पढ़कर उपस्थित जनों को विवाह की तिथि तथा समय आदि से अवगत करावें। पूजन के बाद वर की बहन या बुआ आरता व वारी फेरी करे और उन्हें भेंट दी जाये। वर के रूमाल में थोड़े बताशे व लग्न पत्रिका दे दें। वर को देवस्थान पर ले जाकर देव दर्शन करायें। फिर वर को माता की गोद में बैठावें।

हल्द हाथ

वर या कन्या को तेल व उबटन लगाकर सिर सहित स्नान करावें। कन्या को गुलाबी साड़ी (गोटे लगी) पहना कर काली चूड़ी व नयी बनी नथ पहनायी जाये। फिर आँगन में चौक पूरकर दो पट्टे बिछावें। कन्या/वर, जिसका विवाह हो, उसे और विनायक को पूर्व की ओर मुँह करके बैठावें। गणेश जी व कुल देवी का पूजन करावें। कन्या/वर से डलिया (पिटारी) में रखी कुलदेवी को अर्घ्य दिलवाया जाता है। कुटुम्ब की सब स्त्रियाँ भी कुलदेवी की पूजा करें। वर या कन्या से कुलदेवी पर बताशा, सुपारी व पैसा चढ़वाया जाये। बहन या बुआ आरता व वारी फेरी करे। आरते में कुछ रुपये दिलवा दें। कन्या/वर को देवता के स्थान पर ले जावें। परिवार की बहुओं की गोद में सुपारी व बताशे दिये जायें। दो हथलगी (भाभी, चाची या मामी) के हाथ में कलावा बाँध दें।

चार मिट्टी के कुल्हड़ में डोरा बाँधकर उनके किनारे पीले करें। एक कुल्हड़ में मूँग की दाल रखें। दूसरे कुल्हड़ में उड़द की दाल रखें, तीसरे कुल्हड़ में हल्दी की गाँठें तथा चौथी में कच्चे सूत की कुकड़ी रखें। इन

कुल्हड़ों को देवस्थान में ले जाकर रख दें। एक सीधा, जिसमें 1 किलो मैदा या आटा, 500 ग्राम घी, 250 ग्राम गुड़ हो (सीधे में बिस्कुट भी रखे जा सकते है) व कुछ रुपये कुलदेवी के निमित्त रखे जायें। कन्या या वर की माँ सीधे पर छींटे दें। यह सीधा ननद को दिया जाता है। शाम को गुलगुले-पूरी बनाये जाते हैं। 22 पूरी तथा 22 गुलगुला अथवा नुकती के लड्डू देवताओं के निमित्त निकाले जाते हैं, जिन्हें ननद या ब्राह्मण-ब्राह्मणी को देते हैं।

पाँवड़े बनाना

लग्न पत्रिका लिखने के पहले या उसके बाद किसी भी दिन अपनी सुविधानुसार 9 (नौ) किलो मैदा के पाँवड़े बनाये जायें।

9 (नौ) किलो मैदा में लगभग सवा किलो मोयन डालकर 216 पाँवड़े बनाये जाते हैं। निम्न चार दिन पाँवड़े रक्खे जाते हैं- प्रतिदिन एक डलिया में 50 पाँवड़े, रुपये तथा 1 ब्लाउज पीस।

कन्या पक्ष–(1) तेलताई के दिन; (2) रतजगे में; (3) फेरे के समय; (4) विदा के समय।

वर पक्ष–(1) तेलताई के दिन; (2) रतजगे में; (3) घुड़चढ़ी पर; (4) बहू के आने पर रतजगे में।

50-50 पाँवड़े चार बार रखे जाने के बाद 16 पाँवड़े बचते हैं जिनमें से 4 पाँवड़े चाक-पूजन के समय थाली में रखे जाते हैं। कोई पाँवड़ा टूट-फूट जाये, इसलिए कुछ अधिक बना लेते हैं। (**आजकल इससे आधा पकवान बनवाने व देने की प्रथा भी चल गयी है, आधे पकवान की जगह रुपये दे दिये जाते हैं।**)

कोठियार

पकवान बनाने वाले दिन के बाद शादी के लिए बनने वाले सामान को रखने के लिए एक स्थान निश्चित करते हैं, जिसे **'कोठियार'** कहते हैं।

इस कोठियार में प्रतिदिन घी का दिया जलाया जाये। शादी के लिए बनी या आई मिठाई आदि हर वस्तु कोठियार में रखी जाये। विदा के दिन कोठियार के दरवाजे की चौखट पर वर के सवासने द्वारा वन्दनवार बाँधी जाती है। उसी समय वर के सवासने को वन्दनवार की तीयल दे दी जाये।

देव-पूजन तथा रतजगा

तेलताई की पहली रात को पूर्व दिशा वाली दीवार पर हल्दी व आटे के पिठावे से **'रात'** अलंकृत की जाती है। (**आजकल रात बनी बनाई (रंगीन) भी मिल जाती है।**) 'रात' के ऊपर लाल कपड़े में हल्दी की गाँठ, एक सुपारी, पैसे व अक्षत डालकर **'रात'** के बीचों-बीच चिपका दें व उस पर कलावा की जोड़ी भी लगा दें। एक कढ़ाई (बिना कुंडे वाली) में सरसों का तेल डाल कर कलावे की बत्ती जलायें। वर/कन्या को पट्टे पर बैठा कर

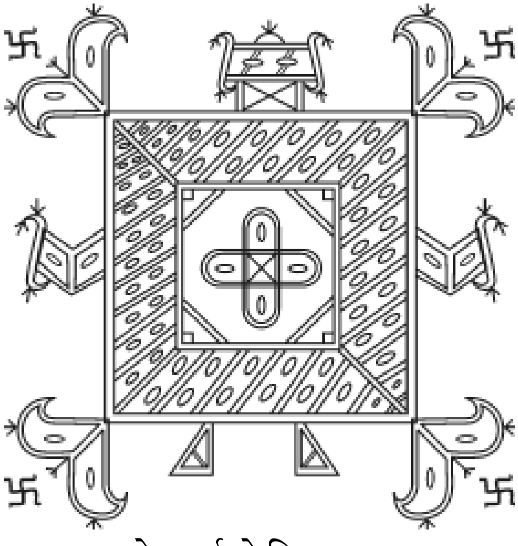

तेल ताई के दिन रतजगा

देवताओं आदि का पूजन तथा सेढ़माता की पूजा करवाई जाती है। माता तथा कुटुम्ब की स्त्रियाँ भी पूजा करती हैं। बताशे, सुपारी तथा पैसा चढ़ाया जाता है। फिर बहन या बुआ द्वारा आरता होता है। सेढ़माता के सामने मायदे की तीयल व सवा ग्यारह रुपये और 50 पाँवड़े तथा एक ब्लाउज़ पीस रखा जाता है। हल्द हाथ के दिन की तरह सीधा भी रखा जाता है। यह नगद, पाँवड़े आदि सब सामान शादी के बाद सवासनी (बहन या बुआ) को दिया जाता है। वर/कन्या देवस्थान में जाकर प्रणाम करते हैं। रात को मंगल गान व **'रतजगा'** किया जाता है। महिलाएँ सगुन की मेंहदी लगाती हैं।

तेलताई

वर/कन्या को मय विनायक के उबटन लगाकर नहलाते हैं। फिर वर/कन्या को आँगन में चौक पूरकर पट्टा बिछाकर विनायक सहित बिठाया जाये। कुलदेवी की पूजा वर/कन्या तथा उनकी माँ व कुटुम्ब की स्त्रियाँ करें। एक नई कटोरी में सरसों का तेल रखें। दूब के 16-16 टुकड़ों को एकत्रित करके कलावा के सूत से उन्हें बाँधकर 4 गुच्छी बना लें। चार जोड़ी कलावे (**आजकल कांकन बने बनाये आते हैं**), 4 लोहे के छल्ले, 4 लाख के छल्ले, 4 छोटे-छोटे लाल कपड़ों में राई व नमक की डली बाँधकर रखें।

गौर की मूर्ति, जो हर परिवार में होती है, उसको स्नान कराके रोली-चावल लगाकर किसी पात्र में रख दें। अब दो सुहागिन स्त्रियाँ (भाभी, चाची आदि हों) हरी दूब की दो लच्छियों को तेल में डुबोकर पहले उनसे गौर माता के नीचे से ऊपर दोनों पैर के पंजों, दोनों घुटनों, दोनों कंधों और माथे पर तेल चढ़ावें। इसी प्रकार दूब की लच्छियों द्वारा वर/कन्या पर भी तीन बार तेल चढ़ाया जाये। तेल चढाने वाली स्त्रियों को टॉफी/मिठाई खिलायी जाये।

कांकण बाँधना

तेल चढ़ चुकने के बाद कलावा में लोहे का एक छल्ला, एक लाख का छल्ला, एक पोटली राई-नमक की बाँधकर, इस प्रकार के चार कांकण तैयार किये जाये। (कांकण बने बनाये आते हैं) दो कांकण गौर के पैर और हाथ में बाँध दिये जाये। बाकी दो में से एक वर के दाहिने हाथ में और एक बायें पैर में, सात मजबूत गांठें, जो एक सूत के बीच से दूसरा सूत निकाल कर लगाई जाये, द्वारा बाँध दिये जायें। इसी प्रकार कांकण कन्या के बायें हाथ में तथा दायें पैर में बाँधा जाये।

इसे **'कांकण बाँधना'** कहते हैं। उसके बाद 4 सुहागी तथा 2 बरूठे जिमाये जाते हैं।

ब्रह्मा पूजा (चाक पूजन)

आजकल चाक व कुम्हार प्रायः नहीं मिलते हैं, अतः ब्रह्मा जी की मूर्ति या चित्र को किसी गोल पटरे या चकले पर सजाकर उसकी पूजा की जाये। वर/कन्या तथा उसकी माता, कुटुम्ब की अन्य स्त्रियों के साथ पूजा करें। पूजा कर चुकने पर जेघड़ रखकर चारों ओर पाँच स्वास्तिक बनावें व रोली या हल्दी से पूजन करें। मिट्टी का एक घड़ा ननद को, एक घड़ा बड़ी-बूढ़ी स्त्री को तथा सभी उपस्थित स्त्रियों को एक-एक हांडी दें। आँगन में मंडप के स्थान पर उपरोक्त जेघड़ (करवे वाली छोटी हाँडी या पीतल की छोटी हाँडी) रखवा कर पानी भरवा दें। यह पूजा प्रायः घर के बाहर की जाती है। माता पूजा के बाद घर के मुख्य द्वार के दोनों ओर साथिया बना कर भीतर आवे। ब्रह्मा-पूजन में मूँग, चावल, मँगोड़ी, चार पापड़, चार सुहाल, चार लड्डू, तेल, गुड़, कुछ रुपये और एक कपड़ा होना चाहिए। यह सामान पुरोहित या ब्राह्मण को देना चाहिए।

बूढ़ा बाबा पूजना

वर अथवा कन्या की मां **'बूढ़ा बाबा'** की पूजा करती है। बूढ़ा बाबा पूजन में एक तौलिये पर 7 जगह पर 4-4 पूरी पर 2-2 बेसन की पकौड़ी, 1-1 बताशा/पूआ, 1-1 बैगन की फाक, कुछ रुपये होने चाहियें। यह सामान बहन/बुआ या ब्राह्मण को देना चाहिये।

भात

यह रस्म चाक पूजन के बाद होती है। भात में कन्या/वर के मामा-नाना के यहाँ से प्रायः निम्न सामान आता है–

कन्या का भात–कन्या की माता की चूंदड़ी, एक साड़ी, ब्लाउज, पेटीकोट, रुमाल व आभूषण या उपहार, हरी-लाल चूड़ियाँ, मेंहदी डोरे, कन्या के पिता का जोड़ा, सास की तीयल, ससुर का जोड़ा व तिलक, कन्या के लिए अनवट, बिछिए, कन्यादान के लिये आभूषण या उपहार, कन्या के लिए गुलाबी दुपट्टा जिससे गठजोड़ किया जाता है तथा अन्य रिश्तेदारों के तिलक-उपहार आदि। थाली के लिये रुपये तथा कन्या के भाई बहनों के कपड़े भी हों।

भात का अन्य सामान–दो कलश, दो लोटे, एक टोकनी व लोटा, पलंग व पलंग का बिछावन, तकिया, चौकी तथा चौकी का बिछावन, एक परात व एक थाली, महरी (नौकरानी) के लिए धोती। **(आजकल बरतन व पलंग आदि देना बन्द-सा हो गया है और इसके स्थान पर रुपये दिये जाने लगे हैं।)**

वर का भात–वर के लिए वस्त्र व जूते, वर के पिता का जोड़ा व तिलक, वर की माता के लिए चुंदड़ी व तीयल और आभूषण या उपहार; वर के लिए गोटा लगा हुआ गुलाबी दुपट्टा तथा सास-ससुर का जोड़ा व तीयल, विनायक के कपड़े; बहू की मुँह दिखाई के लिए आभूषण और वर के भाई-बहनों के वस्त्र, अगर हो तो देवरानी, जेठानी व ननद की साड़ी व सभी सम्बन्धियों के तिलक देने की भी प्रथा है।

भात पहरना

वर अथवा कन्या की माता के मायके से भाई-भावज भात लेकर आते हैं। भातेई के स्वागत के लिए घर के मुख्य द्वार को सजावें। मुख्य द्वार के बाहर चौक पूरकर दो पट्टे रखें जिन पर भाई-भावज खड़े हों तथा भातेईयों के साथ आये हुए सभी सज्जन उनके पीछे खड़े हों। द्वार के भीतर की ओर भी चौक पूरकर दो पट्टे बिछाकर वर/कन्या के माता-पिता खड़े हों। उनके पीछे अन्य कुटुम्बी स्त्री-पुरुष खड़े हों। बहन अपने भाइयों का फूल-माला आदि पहनाकर स्वागत करे। महिलाएँ मंगल गान करें। बहन आरते की सजाई हुई थाली में दीपक सजाकर आरता करे व भाई के माथे पर तिलक करके रुपये दें और भावजों के बिन्दी लगाकर गोदी में रुपये दें। एक नया कपड़ा, राई-नोन, सात पीली सीकों में आटा चिपका कर भाई-भावज के ऊपर से वार कर भाई के पीछे डाल दे। भाई, बहन को चुंदड़ी ओढ़ावें। आरते की थाली में रुपये डालें और बहनोई को तिलक करके जोड़ा दें।

बहन के सास-ससुर को तीयल जोड़ा दें व तिलक के रुपये दें तथा समस्त रिश्तेदारों कन्या के बाबा, चाचा, ताऊ, तथा चाचा-ताऊ के प्रत्येक उपस्थित लड़कों के तिलक करके उन्हें रुपये दें। वर के लिए जो कपड़े, दुपट्टा, जूता आदि लाये गये हों वह उन्हें दें। विनायक के कपड़े भी देने चाहिए। इसके बाद भातेईयों (भात लाने वालों) को आदरपूर्वक घर के अन्दर ले जाकर उन्हें बैठाकर झूठ (एक पात्र में कुछ मीठा या किशमिश व मेवा आदि रखकर) द्वारा उनका मुँह जूठा करा दें। शरबत आदि ठंडा पिलावें व पगधोई करावें। जेघड़ में सगुन के रुपये डाल दें। 2 या 5 ब्राह्मण जिमाये जाते हैं।

भात की विदा में भाई-भाभी, भतीजों के तिलक के रुपये दिये जाते हैं। भाभी व भतीज बहू के लिए ब्लाउज पीस दिये जायें। एक लोटा, एक कटोरा (इच्छा अनुसार बर्तन), सवा गज गुलाबी कपड़ा या रुपया, सवा दो

किलो मीठे, नमकीन सकरपारे की कोथली, लड्डू, फल मिठाई आदि दी जाती है।

मंडप-रोपन

कन्या के विवाह में भात पहन चुकने के बाद मंडप-रोपन होता है।

बाली पहनाना

माढ़ा गाड़ने के पश्चात् कन्या के चाचा व ताऊ कन्या को सोने की बाली पहनायें। कन्या के पिता द्वारा उन्हें एक पत्तल (4 लड्डू—4 कचौरी की) देकर व तिलक करके इच्छानुसार रुपये दिये जायें।

फोकण्डी

कन्या/वर की माता एक हांडी में 32 लड्डू तथा मैदा के बने 32 फल और उसके ऊपर साड़ी या तीयल व कुछ रुपये रखकर अपने परिवार की बड़ी स्त्री को देकर सम्मानित करे और आशीर्वाद प्राप्त करे। यदि बुजुर्ग पुरुष को फोकण्डी देनी है तो पुरुष के कपड़े दिये जायें।

घुड़चढ़ी के लिए तैयार सामान की सूची

वर के कपड़े, गुलाबी दुपट्टा, हार फूलों का, फूल, साफा, मौड़ी, सेहरा, कलंगी, विनायक के कपड़े, काजल की डिब्बी, काजल डलाई के नेग हेतु सामग्री, तसले में घोड़ी के लिये भीगी हुई चने की दाल 1 किलो, सजा हुआ आरता थाल, सात पीली सींके वारने की, एक ब्लाउज पीस वारने का, लाल थैली में बूंदी के लड्डू, गठ जोड़ा, माता को दूध पिलाई, बहन बुआ मौसी को घोड़ी के आगे की साड़ी।

घुड़चढ़ी

भात के बाद उसी दिन शाम को सुविधानुसार वर को स्नान कराके मामा के घर से आये कपड़े पहनाये जायें। वर का बहनोई साफा बाँधे, सेहरा बाँधे। विनायक को भी नये कपड़े पहनाये जायें। वर के साफा पर

मौड़ बाँधी जाये, कलँगी लगाई जाये। वर के कंधे पर गुलाबी दुपट्टा रखा जाये। उसे वर के पिता इच्छानुसार उपहारस्वरूप भेंट या रुपये दें।

आँगन में चौक पूर कर उस पर पट्टे व कालीन बिछाकर दायीं ओर वर व बायीं ओर विनायक को बैठायें। वर के माथे पर रोली-अक्षत से पहले बहन (सवासनी) तिलक करे। भाभी, मामी, चाची आदि काजल डालती हैं। उन्हें कुछ भेंट दी जाती है। सब कुटुम्बीजन सम्बन्धी व मित्रगण भी वर को तिलक करें, आशीर्वाद दें। बहन या बहनोई आरता करें व वारी फेरी करें।

गठजोड़ा घुड़चढ़ी के समय ही दे देते हैं। यह वर की बहन या बुआ के यहां से आता है। मलमल की धोती को हल्दी से किनारे रंगकर उसमें एक नारियल, सुपारी, हल्दी की गाँठ तथा पैसे बाँध कर गाँठ लगा देते हैं। इसके पश्चात् वर पट्टे से उठकर नातेदारों सहित बाहर निकले। वर सजी हुई घोड़ी पर सवार हो। चने की दाल, दूध, पानी, हरी दूब रखकर घोड़ी को खिलाया जाये तथा घोड़ी वाले को न्योछावर दी जाये।

वर की माता एक थैली में लड्डू रखकर वर को दे। वर अपनी माता को दूध पिलाई का नेग भेंट करे। अपनी बुआ व बहनों आदि को साड़ी भेंट करे। पहले देवालय में जाकर वर भगवान के दर्शन करे।

बरी में भेजने का सामान

कन्या के शहर में पहुँचकर निकासी से पहले वर पक्ष द्वारा कन्या के लिए 5 गोद जो गुलाबी कपड़े की बनी हो निम्नानुसार भेजी जाती है—एक गोद फेरों की, एक गोद बरी की, एक गोद कांकण की, एक गोद सिर गूंधी की व एक गोद पलंग की। इस प्रकार पाँच गोदें होती हैं, जिसमें एक बड़ी गोद होती है। उसमें एक साबुत गोला व लगभग 500 ग्राम मेवा रहती है। बाकी चार छोटी गोदों में चीर सुपारी व लगभग 250 ग्राम मेवा होती है। प्रत्येक गोद में कुछ रुपये भी डालें।

स्वागत बारात

जब बारात कन्या पक्ष वालों के मुख्य द्वार पर पहुँच जाये, तो बरात के स्वागत के लिए, कन्या के दो छोटे भाइयों या भतीजों को लेकर आगे पहुँचें। वर को माला पहना कर उसका स्वागत करें। वर दोनों लड़कों के तिलक करके रुपये व एक-एक गोला भेंट करे। बरातियों का फूल माला आदि से मुख्य द्वार पर ही स्वागत किया जाये।

कन्या पक्ष मुख्य द्वार पर नौशे को चौकी पर खड़ा करके कन्या की माता चाँदी की बनी जाली में से वर का मुँह देखे। राई-नमक ऊपर से उतार कर वर के पीछे डाल दें। एक कपड़ा, सात पीली सीकें वर के ऊपर से वार कर वर के पीछे डाल दें। वर का आरता करके माथे पर तिलक करे व उसे कुछ रुपये दे।

वर माला

मंगलगान के वातावरण में और वर के खड़े हो जाने पर कन्या जयमाला डाले। वर भी कन्या को जयमाला पहनावे। इसे **'जयमाल डालना'** कहते हैं।

सम्प्रदान

वर को एक चौकी पर, जिस पर लाल रंग की बिछावन (गोटा लगा हुआ), बैठा कर चौकी के दोनों ओर दो कलश रखे जायें। कलश पर लोटा व नारियल रखा हो। पंडित जी द्वारा वर के हाथ से गणेश जी तथा नवग्रहों की पूजा कराई जाये। कन्या का पिता वर के पेची बाँधे और तिलक कर रुपया दे। वर को पहनने के कपड़े व एक स्वर्ण की अँगूठी/चेन, घड़ी आदि परात में रखकर भेंट स्वरूप दिये जायें। वर का सवासना आरता करें। इस रस्म को **'सम्प्रदान'** कहते हैं।

विवाह

कन्या बहन-बुआ के घर की आई चूंदरी पहने। मामा उसको सिल

पर खड़ा करके अनवट बिछिये पहनावे। जो आभूषण कन्या को देने हों वे उसे पहना दिये जायें। यह आवश्यक है कि फेरों के समय कन्या के शरीर पर सुन्दर वस्त्र व आभूषण हों। परन्तु वर पक्ष की ओर का कोई वस्त्र या आभूषण न हो। कन्या का मामा फेरों से पहले वर के तीन फेरे कराए।

कन्या को बुलाकर गऊदान, वस्त्रदान, अन्नदान, छायादान, पोलादान आदि करने के बाद कन्यादान होता है। पहले माता-पिता कन्यादान करते हैं फिर अन्य सम्बन्धी अपने जोड़े के साथ कन्यादान करते हैं। कन्यादान के बाद हवन व फेरे होते हैं। फेरे के समय एक डलिया में 50 पाँवड़े, एक ब्लाउज पीस तथा रुपये मंडप के पास रखने चाहिये। यह कन्या के ससुराल जाते हैं।

कन्या पक्ष द्वारा वर पक्ष के बुजुर्ग को सोने की सीख व 250 ग्राम का नुकती का लड्डू जिसमें एक सिक्का रखा होता है, सम्मान पूर्वक दिया जाता है।

बरी पहनाना

फेरों के बाद वर-पक्ष के यहाँ से आई बरी की वस्तुएँ कन्या को पहनाई जाती हैं। बरी में एक साड़ी, चुनरी, सुहाग पिटारी, मेंहदी, डोरे, दो जोड़े चूड़े (चूड़ियाँ), चप्पल, मौड़ी, चार गोद छोटी व एक बड़ी गोद दी जाये, जिनका वर्णन गोद के शीर्षक में कर चुके हैं। साथ में एक सोने की अँगूठी कांगन के लिए तथा वधू के लिए आभूषण आदि भी होने चाहियें। वर की बहन, बुआ, भतीजियाँ, भांजी जो बारात में आयी हों, वे विवाह-मंडप के नीचे वधू को बिठलाकर बरी पहनावें। वधू का मुँह जुठला दें।

जूता चुराई

सालियों द्वारा जूते चुराये जाते हैं। उन्हें जूता वापस करने का नेग, एक गोला, पान व कुछ रुपये भेंटस्वरूप देकर जूते वापस कर दिये जाते हैं। आजकल कुंवर कलेवा न होने के कारण सालियाँ फेरे के समय ही वर के जूते चुरा लेती हैं और बाद में नेग लेकर वापस कर देती हैं।

विदा के समय का सामान

विदा में पाँच प्रकार का पकवान—गुना, आस, फल, पांवड़े और लड्डू दिये जाते हैं। गुना, आस, पांवड़े— ये मीठी और फीकी दोनों तरह की बनती हैं। आटे के लड्डू व तिल के लड्डू बनते हैं। इन सबका वजन 5 किलो हो। एक थैली में सवा किलो मीठे व नमकीन सकरपारा, सात गुझिया रखकर थैली रंगीन लाल या पीले धागे से सी दी जाये। थैली को एक डलिया में रखकर डलिया पर लाल या गुलाबी नया कपड़ा ढककर रंगीन धागे से सी दिया जाये। इसे **'बायना संजोना'** कहते हैं। इस डलिया के ऊपर एक थैली, जिसमें (लगभग 500 ग्राम) सकरपारा भरकर, सी कर रखी जाये। यह **'रास्ते की कोथली'** कहलाती है। एक अन्य डलिया में 15 पूरी माठ की भी रखें व नए गुलाबी कपड़े से ढक कर रंगीन धागे से सी दें। इसे **'माठ संजोना'** कहते हैं।

बर्तन

एक टोकनी, दो परात, दो थाली, दो लोटे, सात कटोरी।

सवा किलो मूँग, सवा किलो चावल दिये जाते हैं। एक पीतल की टोकनी में 25 लड्डू नुकती के, प्रत्येक लड्डू लगभग 100 से 125 ग्राम का हो, ये लड्डू आदि सामान समधन के लिए होता है। टोकनी के भीतर सब सामान डाल कर टोकनी के मुँह पर लोटा रखकर पिठावे से बंद कर दें। लोटे में घी भरा जाये। टोकनी को पिठावा से चित्रकारी करके सजाया

जाता है। माठ की 10 से 15 पूरी, 50 या 100 पाँवड़े, सकरपारे की दो कोथली सवा-सवा किलो की बनाई जायें। यह बिदा के समय दी जायें। लड्डू व कचौरी की पत्तल भी दी जाती हैं। पत्तलें इच्छानुसार 25 या अधिक हों। (**आजकल पत्तल की जगह मिठाई/भाजी के डिब्बे भी दिए जाते हैं।**)

तीयल

महिलाओं के जोड़े—कन्या के साथ समधन, दादस, नानस, वंदरवार, फेरपट्टा, वस्त्रदान तथा पिछोपा इस प्रकार सात तीयल भेजी जाती हैं। समधन की तीयल के साथ इच्छानुसार रुपये या उपहार दें। नानस, दादस की तीयल के साथ भी भेंट इच्छानुसार दें। तीयल में साड़ी, ब्लाउज, पेटीकोट, रूमाल, तौलिया/स्वेटर आदि पांच वस्त्र तथा इच्छानुसार रुपये होते हैं।

पुरुषों को जोड़े—समधी, दादसरा, नानसरा, चाचा-ताऊ, सवासना इस प्रकार पांच जोड़े पुरुषों के होते हैं। प्रत्येक के साथ इच्छानुसार तिलक के रुपये दें। जोड़े में पैन्ट, कमीज, रूमाल, मोजे, तौलिया/स्वेटर आदि पाँच वस्त्र होते हैं।

बंदनवार बाँधना—वर का बहनोई कन्या पक्ष के कोठियार में बंदनवार बाँधे तथा नेग में बंदनवार की तीयल दी जाती है।

पलंग—पलंग या पट्टे बिछाकर उस पर वर और कन्या को मौड़ी बाँधकर बिठाया जाये। सब नातेदार तिलक करके परिक्रमा कर भेंट दें। वारी फेरी करें। पहले कन्या पक्ष के सवासने को जोड़ा देकर तिलक करें। इसके बाद वर पक्ष के, यदि वे अपने सम्बन्धियों को जोड़े दिलवाना चाहें, तो दादासरे, ससुर, चाचा, ताऊ, नानासरे व सवासने का मण्डप के नीचे तिलक करें व जोड़े पहनावें; अन्यथा इस समय तिलक ही दे दें। उनके

ऊपर धान या जौ डाले जाते हैं। पलंग या पट्टे से उठकर वर मंडप के उत्तर की ओर के बंधन को खोल देता है। इसे **'तनी खुलाई'** कहते हैं। इसका नेग वर को दिया जाता है। (**यह रस्म भी आजकल नहीं की जा रही है।**)

फेरपट्टा—कन्या पक्ष के यहाँ की आखिरी रस्म विदा की होती है। यह रस्म सूर्य की साक्षी में होनी चाहिये। आजकल प्रातः तक बारात नहीं रुकती, इसलिए पलंग के बाद ही फेर-पट्टा कर दिया जाता है। विदा से पहले चौक पूरकर पट्टा बिछाकर वर-कन्या को बैठाते हैं। पंडित गणेश जी व अन्य देवताओं की पूजा करवायें। वधू की सवासनी आरता करे और वर उसको आरते की थाली में रुपये दे। वर तथा कन्या के नीचे बिछाये हुए पट्टों को आपस में बदलवा दें। पट्टों को इस प्रकार बदला जाये कि वे आपस में भिड़ने न पावें। कन्या को एक गुलाबी ओढ़ना ओढ़ा दिया जाता है। फेरपट्टे की गोद दी जाती है। फेरपट्टा वाली तीयल वर पक्ष को दी जाती है। आरता किया जाता है। अब कन्या कोठियार की देहली पूजती है। नौकरों, नाइन, महरी आदि को कन्या के हाथ से वस्त्र और रुपये दिलवाये जाते हैं, जो वर पक्ष वाले देते हैं। इस रस्म के बाद वर-वधू विदा कर दिये जाते हैं। वे अब वहाँ ठहर नहीं सकते। कन्या के नीचे जो पट्टा बिछा था और सीप जिससे पूजा व तिलक आदि किया गया था, वे कन्या के साथ जाते हैं। कन्या को सब उपस्थित जन खीसी देते हैं। इसमें रुपये या कुछ उपहार दिया जाता है।

विदाई—कन्या सभी परिवारजनों से गले मिलकर बड़ों का आशीर्वाद लेकर पति के घर को जाती है। कन्या पक्ष के यहाँ से कन्या विदा करने के बाद मूँग चावल की खिचड़ी बनती है। कोई अच्छा दिन देखकर मण्डप उतार दिया जाता है तब कथा कहलवा कर ब्राह्मण जिमा दें। देवता को भी विदा करते हैं। हलुवा बनाकर कढ़ाई ठंडी करते हैं। इस प्रकार कन्या के विवाह की रस्म पूर्ण हुई।

बारात वापस आने पर वर पक्ष के यहाँ की रस्में

बारात वर के घर पहुँचने पर नववधू का द्वार पर ननदरानी स्वागत करके वधू को गाड़ी से उतारती हैं, मांग भरती हैं और बिन्दी लगाती हैं। वर की माता मुख्य द्वार पर चौक पूरकर पट्टे पर वर तथा वधू दोनों को खड़ा करके उनका स्वागत करके आरता करती है। नेती (छाछ बिलोने वाली रस्सी) से दोनों को नापती है। यह जानने के लिए कि वधू मेरे पुत्र के अनुरूप लम्बी है या नहीं।

सात तश्तरियों में आटे की कच्ची पूरी रख दी जाती हैं। वर चाकू से तश्तरियों को छूता है एवं वधू इन सातों तश्तरियों को इस प्रकार उठावे कि वे आपस में आवाज न करें। वर-वधू गठजोड़े से घर में प्रवेश करते हैं और सीधे देवस्थान पर जाते हैं।

वार रुकाई

देवस्थान पर जाते समय भाई व भावज का परिचय लेने व वार रुकाई के लिए बहन द्वार पर खड़ी होती है। भाई स्नेहसहित बहन को सम्मानपूर्वक भेंट (धन) देता है।

देवपूजन

देवस्थान में जाकर वर-वधू देवपूजन करते हैं। कुटुम्ब के सभी जन यथायोग्य एक के पीछे एक होकर बैठते हैं। सबसे आगे वधू बैठती है फिर उसके बाद छोटा देवर बैठता है। इसके बाद लाइन में छोटों से शुरू करते हुए परिवार के अन्य लोग बैठते हैं, सबसे अन्त में बुजुर्ग। एक सूप में मूँग, चावल रखकर वधू को दिये जाते हैं कि वह इनका इस तरह से सूप से पीछे को फटके कि यह अनाज सब जनों के पास तक पहुँच जाये। इसका आशय यह है कि छोटे से बड़े तक सबके भरण-पोषण की व्यवस्था करना वधू का कर्तव्य होगा। इसे **बहू-पसारा** कहते हैं।

वधू के पीछे जो छोटा देवर बैठा है उसे वधू पांच लड्डू दे। देवर प्रसन्न होकर भाभी से कहे कि **"पाँच लड्डू मुझको, लाल बेटा तुझको"।** इसके बाद सास वधू का मुँह देखे, मुँह दिखाई दे और वारी फेरी करें। फिर घर के अन्य कुटुम्बीजन वधू की मुँह दिखाई करके वारी फेरी करें।

कांकण खोलना

वर-वधू नहा लें तब कांकण खोलने का आयोजन किया जाये। भाभी, चाची या मामी कांकण खिलवायें। कांकण खेलने के समय कूंडे में जल, दूब व हल्दी डाल दें। फिर दोनों के कांकण खुलवा कर कूँडे में ही डाल कर कांकण खिलवायें। कूंडे में एक चाँदी व एक सोने की अँगूठी डालकर कांकण खिलवाते हैं। 5 या 7 बार कांकण खिलाया जाता है। आखिरी बार में जिसकी मुट्ठी में सोने की अँगूठी आ जाती है उसकी ही

बहू के आने पर रतजगा

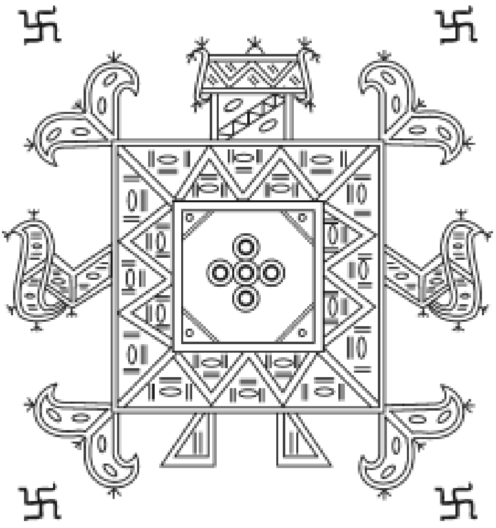

जीत मानी जाती है। अब वधू की बन्द मुट्ठी को वर द्वारा खुलवायें। इसके बाद वर वह सोने की अँगूठी वधू को पहनावे। ननद आरता करे व उसे आरते में भेंट दी जाये। दोनों को उठाकर देवस्थान पर ले जायें। ले जाते समय बहन वार रुकाई करें। देवता पर छींटे दिलवा दें। वधू को नया जोड़ा पहनवाया जाये।

इसके पश्चात् भोजन आदि होता है। सर्वप्रथम चार सुहागिन व दो बरुठे खिलाये जाते हैं। बहू से भोजन परोसवाना चाहिए। रात को रतजगा किया जाता है। गाना-बजाना व नाच आदि होता है। वधू से भी गाना व नाच कराया जाता है। इस प्रकार उसकी भी परीक्षा हो जाती है।

देव-स्थान में एक किलो मैदा या आटा, 500 ग्राम घी, 500 ग्राम गुड़, एक तीयल तथा कुछ रुपये चढ़ाये जाते हैं। 50 पाँवड़े, एक ब्लाउज, तथा रुपया एक डलिया में रक्खे जाते हैं। **'रात'** की पूजा की जाती है। पूजा के बाद बहू कुछ मीठा देकर सबके पैर छूती है।

बायना खोलना

बहू के साथ आया हुआ सामान (बायना) खोला जाता है। बायने की डलिया सौभाग्यवती स्त्रियाँ खोलती हैं। उसमें से देवताओं के निमित्त 22 पकवान निकाले जाते हैं, जो ननद को अथवा ब्राह्मणी को दिये जाते हैं। टोकनी खोल कर बड़ा लड्डू वधू की सास को दिया जाता है। फिर दो लड्डू के 22 टुकड़े करके, जो देवताओं के निमित्त होते हैं, (अछूते) निकाले जाते हैं। ये भी ननद या ब्राह्मणी को देते हैं। शुभ दिन देखकर बहू की मायके को वापसी होती है। सवा सेर सकरपारा एक कोथली में रखकर बहू के साथ दिये जाते हैं। समधन की तीयल व एक अन्य साड़ी और दें।

विवाह के पश्चात शुभ दिन देखकर भगवान सत्यनारायण की कथा की जाती है।

In Memory of

Shri Nihal Chand Bhargava

Smt. Kanti Devi Bhargava

Shri Ramesh Chand Bhargava

Eyetec Opticians

200, KATRA BARYAN, FATEHPURI,
DELHI - 110 006 (INDIA)
Phone Off. : 011-23939670, 23919811

Eyetec Optics

211, SOUTHEX TOWER, 2nd FLOOR
389, MASJID MOTH, SOUTH EXTN. PART - 2
NEW DELHI-110049 (INDIA)

G-14, SOUTHEX PLAZA-I, NEAR MASJID MOTH,
NDSE-II, NEW DELHI-110049 (INDIA)
Phone : 011-26259670, 26259811
E-mail : eyetecoptics@hotmail.com

Smt. Sandhya Bhargava

Lokesh Bhargava **Neeraj Bhargava**

With Best Compliments From :

Late Shri J.N. Bhargava (M.A.)

Founder

JOLLY ENGINEERING WORKS

Manufacturers of :

QUALITY HINGES & HARDWARE GOODS

1/3, ROOP NAGAR, DELHI-110007

Phones : Factory cum Office : 23911688

Fax : 23916512

Resi. : 23950878, 23916807

e-mail : jollyenggworks@usa.net

With Best Compliments from :

Anil Bhargava : 9810024116
Rajat Bhargava : 9873434821

Deals in :

Paper • Paper Board • Kraft Paper
• Waste Paper • Polyster Film
• ITC Make Paper Board
• Sakata Make Offset Inks
• Management Consultancy

PRINCIPALS :

- **Siddharth Papers Pvt. Ltd.**
- **Siddheshwari Paper Udyog Pvt. Ltd.**
- **N S Papers Ltd**
- **Polyplex Corporation Ltd.**
- **Sakata Inx (India) Pvt. Ltd.**
- **Anand Duplex Ltd.**

ABBA CONSULTANTS PVT. LTD.

107, Siddhartha Chambers, 55-A,
Kalu Sarai, Hauz Khas, New Delhi-110016
Email Id: *anilbhargava@gmail.com,*
rajat14@gmail.com

Mahindra
GENUINE SPARES
शान से बेचो ● सुकून से खरीदो

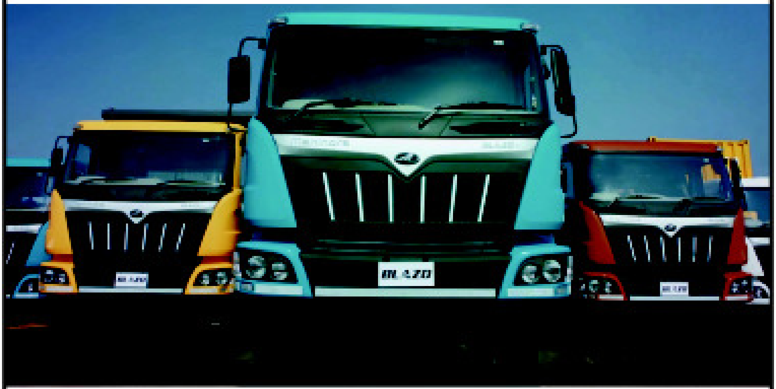

Authorised Distributor

BHARGAVA MOTORS

2597/1, 1st Floor, Ram Singh Motor Market, Hamilton Road,
Kashmere Gate, Delhi-110006
Kashmere Gate : 011-23968091, 23935259, 9560697255
Noida : 0120-4299498, 9650697233
Gurgaon : 0124-4387258, 9560697232

With best compliments from

SMT.TRIVENI DEVI BHARGAVA DHARMARTH TRUST

Regd. Office :

Flat No. C-103, Bhrigu Appt., Plot No. 4, Sector-9,
Dwarka Phase-1, New Delhi-110075

Phone : 32930553 Mobile: 9871292072

Fax : 91-11-25920193
Mobile : 9810363235
E-mail : abcapd@live.com

25120193 (O)
25130548 (R)

Ashok Bhargava

August Pharmaceuticals (Delhi)

PHARMACEUTICALS RAW-MATERIALS &
EXCIPIENTS INDENTOR & SUPPLIER

WZ-414, NANAKPURA, HARI NAGAR,
NEW DELHI-110064

RES. : C-2A, MIG FLATS, MAYAPURI, DELHI-110064

In Memory of Our Father

SHRI GYAN BHARGAVA

MADHUR & COMPANY

Authorised Distributors :

Reid & Taylor

425-426, Ist Floor, Katra Choban,
Chandni Chowk, Delhi-110006
Phones : 23269173, 23257543
Resi. : 26947140, 26944932

Prop. Madhur Bhargava

ARYAN CLASSES

INNOVATIVE LEARNING • PROVEN RESULTS

A HIGHLY SPECIALISED PREPARATORY INSTITUTE

FOR IIT-JEE, DTU, BITS & NTSE

Our students achieved highest success percentage
In IIT JEE, BIT SAT, AIEEE for the last five years

PROGRAMME SCHEDULE

For VIII, IX, X, XI and XII students (1 / 2 / 3 / 4 Year Programme)

Special Courses for weak and average students and for genius also.

Special Classes for Board and school sylabus

For Admission cum Scholarship Test Contact : 9711086251

ARYAN CLASSES, Mahesh Bhargav
500/7, Lane No.5, Vishwas Nagar, Delhi 110032 Tel: 011-22387553, 22305075
Email: maheshbhargava97@rediffmail.com, harishkharbanda@rediffmail.com
Visit us at www.aryanclassesonline.com and follow us on

With Best Compliments From

SURESH BHARGAVA

PLOTS

AGRA, FARIDABAD, JAIPUR, ROHTAK, MOHALI

FLATS

FARIDABAD, CHANDIGARH, KARNAL, BHIWARI

KANU ESTATES (PVT.) LTD.

G-24, SIDDHARTHA ENCLAVE, NEW DELHI-110014

Ph. : 91-11-26344142, 26347664, 26342775, 26341413

Fax : 00-91-11-26346049

Website : sureshb@kannuestate.com

In Memory of

SHRI KRISHAN KUMAR — SMT. SARLA BHARGAVA

1924-2009 1928-2005

Raymond SHOP

MOHAN LAL BHARGAVA & CO.

SINCE 1920

1845, FOUNTAIN, CHANDNI CHOWK
DELHI-110006

PHONE : 23269599 · FAX : 23254821

E-mail : mlb1845@gmail.com

In memory of

Shri Shankar Lal Bhargava

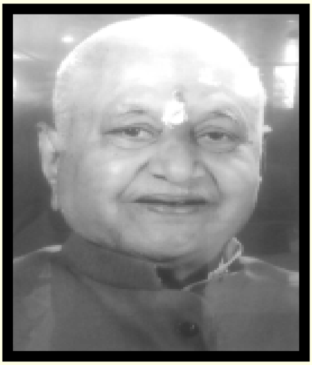

Raj Shree
टंडाई पाउडर

SHAMBHU NATH SURESH KUMAR
DELHI-6

श्री
मिल्क मसाला
केसर पिस्ता, बादाम

SHAMBHU NATH SURESH KUMAR

DRY FRUITS, SPICES & DRIED FRUITS

SHANKAR LAL VED PRAKASH
SHANKAR LAL KAMAL CHAND

6701, KHARI BAOLI, DELHI-110006
Mobile : 9810105818, 9818521507, 9212111074

Suresh Bhargava

With best compliments from

PRAVIN PAPER PRODUCTS

Manufacturers of :
Cloth Lined Paper, Cloth Centred Paper,
File Covers, File Boards and All Types of Envelopes

28-A, Vidhan Sabha Marg,
Lucknow-226001
Phone : (0522) 2221375, 2223535, 2227733

Associates :

Pradeep Bhargava

P. KUMAR & CO.

40 Cantt Road Lucknow
Phone : (0522) 2221375

Pramod Bhargava / Prabhat Bhargava

PRAVIN PAPER INDUSTRIES

B-34, Site IV Industrial Area,
Sahibabad (Ghaziabad) U.P.
Phone : (95120) 2895476
Resi. : (95120) 2641357
Mobile : 9810644984

Head Office :
58, Chand Ganj Garden, Lucknow
Phone : (0522) 2374733

Rajender Nath Bhargava

Narender Bhargava *Gunjan Bhargava*

UMA UNIFORMS

Mfrs. of : All kinds of Uniforms

Specialists in :
School, Hospital, Staff, Workshop Uniforms

C-18, GALI NO. 3, VILLAGE KOTLA,
MAYUR VIHAR, PHASE-1, DELHI-110091
Ph. : 9868222734

With best compliments from Om Prakash Bhargava

BHARGAVA PLASTICS

Manufacturers of :

POLYTHLENE TUBES, BAGS & SHEETS

Sales Office
1/9804, West Gorakh Park, Gali No.1, Babarpur Road,
Opp Hanuman Mandir, Shahdara, Delhi-110032
Phone : 22824533

Factory
L-97, Sector-1, Udyog Vihar, Bawana Industrial Area
Bawana, Delhi-110039 • Phone : 27750458
Phone : 9312280965 Mobile : 9810447989

With Best Compliments from:
KISHORI LAL AGENCIES
Wholesale Paper and Board Merchants
Wiro, Spiro, Diary, Calendar,
Wedding Card and Boxes
SUNDRAM CARDS
Specialists in:
Designer Wedding Cards
73, Chawri Bazar, Delhi-110006
Davender Bhargava 9312973134
Arvind Bhargava 9810228863
Pravin Bhargava 9810019290
E-mail : kishorilal73@gmail.com
sundramcards@gmail.com

With best compliments from

Diwakar 9810003713
Sudhakar 9810042132
Kunal 9891091010
Rishabh 9990000225

BHARGAVA
COMMERCIAL PVT. LTD.

(WHOLESALE PAPER & BOARD MERCHANTS)
21/12, Darya Ganj, Dev Niwas, New Delhi-110 002
Ph.: 23269990, 23280556, 23254041 Fax : 91-11-23280557

BHAI PAPERS PVT. LTD.

PAPER & WIRO IMPORTERS & INDENTORS

BHAI SPIRAL SPICO (P) LTD.

C-93, D.D.A. SHEDS, OKHLA INDUSTRIAL AREA
PHASE-I, NEW DELHI-110020
PHONES : 26811616, 26813939

RESI. : 22151617, 22141617

With Best Compliments:
Mr. Suresh Bhargava and Mr. Arshad Usmani

ANANTHAM EPIC HOMES

(Builders & Developers)

Corporate Office:

'A' 511-512, "Bonanza", Sahar Plaza, Andheri Kurla Road, Andheri East, Mumbai 400059

Tel: 022 66916851/2/3 Mob: 8828115822 | E: md@aehomes.co.in | W: www.aehomes.co.in

Site Address:

Opp. Taki Mata Mandir, Near L & T Training Centre Off Mumbai Pune Highway, Rees, Panvel Division - 410206 (Mumbai Metropolitan Region)

Tel. : 27465607, Mob. : 8828115812

BHARGAVA PHYTOLAB
A Leading Homoeopathic Company
BHARGAVA PHYTOLAB
Clinically proven for acute and chronic
Cervical Spondylitis
and
Cervical Spondylosis
Doctor's Most Trusted Brand for
Cervical Spondylosis
Available at all the nearest
Homoeopathy
& Allopathy stores
SPONDIN
BUY ONLINE AT
www.doctorbhargava.com
SPONDIN®
Drops
India's No.1 Selling Brand for
NECK & SHOULDER PAIN
BHARGAVA PHYTOLAB PVT. LTD.
A Leading Homoeopathy Company
Help Line No.:
99-1008-1320

GRACURE
EU GMP cerification from Belgium's FAMHP
Certified for tablets, capsules, liquid syrups, ointments and dry syrups
Believes in "Quality On Time & In Full"
PRIMARY PACKING AREA
EU-GMP Certified Co.
Gracure Pharmaceuticals Ltd.
251-254, 2nd Floor, DLF Tower, Block-IV, 15, Shivaji Marg, New Delhi-110 015 (INDIA)
Phone : +91-11-47770900 Fax : +91-11-477709999
Email : info@gracure.com Website : www.gracure.com

Regd. No. DL©-01/1255/2018-2020
Date of Publishing 28-05-2020
Posted at New Delhi PSO, 28 & 29 Every Month
मई 2020 RNI No. 19737/70

श्री योगेश भार्गव स्वामी, सम्पादक, मुद्रक तथा प्रकाशक के प्रबन्ध से भृगु प्रिंटर्स, डी-6/29ए, दयालपुर, दिल्ली-94 में छपा एवं मानवधर्म भवन, 67/3 मद्रास हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित हुआ। दूरभाष : 9312243182